तृतीय अध्याय

रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों का कथ्य एवं चित्रित जन-जातियों का जीवन यापन

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अ) कथ्य

प्रस्ताविका

1) कब तक पुकारूँ उपन्यास का कथ्य

2) मुर्दो का टीला उपन्यास का कथ्य

3) कब तक पुकारूँ उपन्यास का कथानक

4) मुर्दो का टीला उपन्यास का कथानक

आ) जन-जातियों का जीवन यापन

प्रस्ताविका

क) सांस्कृतिक जीवन व्यापन

1) रूढ़ि प्रथा परम्परा

2) उत्सव - पर्व तीज - त्यौहार

3) लोकगीत

4) लोककथा

5) मनोरंजन के साधन

ख) सामाजिक जीवन यापन

1) देवी - देवता सम्बन्धी मान्यताएँ

2) व्यवसाय एवं **आर्थिक स्थिति**

3) वेशभूषा एवं खान-पान

4) अंधविश्वास

5) जातीय भेद-भावना

6) बोलचाल

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

'डॉ. रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों का कथ्य एवं चित्रित जन–जातियों का जीवन यापन'

अ) कथ्य

प्रस्ताविक

साहित्य की सभी विधाओंमें से अधिक शक्तिशाली अभिव्यक्तिकी विधा उपन्यास है। लेकिन उपन्यास केवल कथा मांत्र नहीं होते बल्कि उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार जीवन का स्वरूप, समस्याएँ, शोषण आदि की अभिव्यक्ति करता है। पहले उपन्यास मनोरंजन का साधन था। किन्तु आज उपन्यास के विषय तथा उद्‌देश्य तत्वों के क्षेत्र में विकास हो रहा है। उपन्यासकार का जीवन के किसी एक अथवा अनेक अंगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। कभी–कभी उपन्यासकार दूसरों की अनुभूतियों का अनुकरण करता है अथवा स्वयं सुख–दुःख को महसूस करता है। जीवन के साधरण और असाधारण घटनाओं, कार्य व्यापारों का उस पर जो प्रभाव पड़ता है, उसे किसी न किसी रूप में उद्‌घाटित करना, उपन्यासकार का फर्ज बनता है। किसी विशेष उद्‌देश्य को लेकर लिखे गये उपन्यास बहुत कम है किन्तु किसी भी उपन्यास में विशिष्ट विचार खुदबखुद आ जाते हैं। उद्‌देश्यरहित उपन्यास निर्जीव है। उपन्यास विधा के सभी तत्वों में कथ्य (उद्‌देश्य) बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है। उपन्यास की महानता, सफलता, असफलता उसके कथ्य पर निर्भर रहती है। उपन्यासकार कथ्य के अनुसार कथा का विस्तार करता रहता है।

रांगेय राघव के विवेच्य उपन्यास "कब तक पुकारूँ" और "मुर्दो का टीला" में विशेष उद्‌देश्य या जीवन दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

"कब तक पुकारूँ" उपन्यास का कथ्य

"कब तक पुकारूँ" इस आँचलिक उपन्यास में यथार्थता का आग्रह पूर्ण रूप से मिलतार है। इस उपन्यास में गरीब एवं नीच जातीयों पर ऊँची जातीयों का अत्याचार तथा वर्गसंघर्ष का चित्रण किया है। शोषित, पीड़ित करनटों के मानसिक, शारीरिक, आर्थिक शोषण से उनमें उत्पन्न सामाजिक मान्यताओं का सही चित्रण करने का प्रयास डॉ. राघवजी ने किया है। इस उपन्यास का

नायक सुखराम करनट शोषित जीवन से त्रस्त तथा अपने बेबसी के प्रति उत्तेजित होकर एक स्थान र कहता है – "....हम नट है। हमारे पास कुछ नहीं है। हम जुआरी, चोर, उच्चक्के, बेईमानी, कमीने, धोकेबाज, झूठे है। हमारी औरतें कुतियों की तरह रहती है। ये सिफाही, ये बड़े लोग उन्हें बीमारी देते हैं। फिर वे औरतें वे ही बीमारी हमे देती है। फिर हम मरते हैं। मरते वक्त गुस्सा आता है तो कत्ल तक करते हैं। हम लोगों को ठगने का जतन करते हैं। जो भूखे मरते हुए किसान हैं वे भी हम से सुखी हैं। उन्हें बौहरा नोचता है, वकील ठकता है, पुलिस खाता है, सब चूसते हैं, पर हम बेघरवार कुत्ते की तरह धूम–घूमाकर जूठन खाने को अपनी आजादी कहते है।"[1] इस उपन्यास में डॉ.रांगेय राघव का प्रमुख उद्देश्य अशिक्षित, गंवार, उत्पीड़ित राजस्थान के जयरामपेशा करनटों का एवं उनकी औरतों के घिनौने जीवन का चित्रण तथा अन्य जातीयों के जीवन का चित्रण करना ही है। और सामन्तवादी वैभव, ऐसों आराम की जिन्दगी जीने के सपने सजानेवाले लोगों का मानसिक द्वन्द्व एवं उनकी मानसिकता की हार इस यथार्थ को भी सूचित करना उनका लक्ष्य रहा है। अतः राघवजी का यह आग्रह रहा है कि उत्पीड़ित छोटे जाति के लोग भी अन्य लोगों के भाँति अनेक कठिनाइयों के बावजूद जीवन की आस्था बनाएँ रहते है तथा उनमें मानवता का भी समावेश है।

"मुर्दों का टीला" उपन्यास का कथ्य

डॉ.रांगेय राघव ने भारतीय इतिहास को अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। राघवजी अतीत में झाँककर मनुष्य और समाज के बारे में शाश्वत समस्याओं को अपनी प्रगाढ़ कल्पना शक्ति द्वारा मोहकता एवं विश्वसनीयता से उभारा गया है। "मुर्दों का टीला" में मोअन–जो–दड़ो महानगर की खुदाई से प्राप्त सामग्री एवं ग्रंथों के आधार पर अनुमान लगाया है। यह कल्पनाप्रधान उपन्यास है। मोअन–जो–दड़ो महानगर की गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली, दास–प्रथा, नारी की सामजिक स्थिति, मनुष्य और समाज का पारस्परिक सम्बन्ध, युध्दा और शान्ति की समस्या अतीत के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। राघवजी का मुख्य लक्ष्य है, ऐतिहासिक उपन्यास का निर्माण तथा इसके द्वारा मार्क्सवादी दर्शन की अभिव्यक्ति। सामन्तवादी, वैभवशाली लोगों द्वारा नारियों का शोषण उनकी घुटनभरी जिन्दगी। इन लोगों द्वारा असत का गला घोंटा जाना तथा सत की रक्षा एवं सत को अबाध रखने के लिए प्रकृति अपना रौद्र रूप धारण करना अर्थात प्रकृति की भी सहनशीलता समाप्त होने पर विनाश कर देती है। अतीत के संदर्भ में वर्तमान की स्थिति,

समस्याओं पर प्रकाश डालना, तथा इतिहास को गलत मान्यताओं, त्रुटिपूर्ण निर्णयों, क्रमों से मुक्ति दिलाना दास–दासियों के बेबस लाचार जीवन का यथार्थ चित्रण करना आदि। इन सब बातों को प्रस्तुत करना राघवजी का उद्देश्य रहा है।

अत: राघवजी ने उपर्युक्त कथ्यों के स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए कथाओं का सहारा लिया है। इस कथाओं का कथानक इस प्रकार हैं –

कथानक

"कब तक पुकारूँ" उपन्यास का कथानक

"कब तक पुकारूँ" यह डॉ.रांगेय राघव का बृहतकाय आँचलिक उपन्यास है। करनट सुखराम इस उपन्यास का नायक है ज्योकि ठाकुर वंश से सम्बन्धित था। सन् 1949 की बात है। डॉ.राघवजी अपने "पाँव का फोड़ा" के इलाज के लिए शहर से गाँव आये थे। उनका इलाज सुखराम करनट कर रहा था। डॉ.राघवजी और सुखराम दोनों जंगल में घूमने जाते थे। एक दिन राघवजी ने सुखराम से अधूरे किले के बारे में पूछा। पहले तो सुखराम ने कुछ भी बताने से इन्कार किया। परन्तु बादमें उसने राघवजी की सहानुभूति के कारण अधूरा किला तथा अपने बारे में सब कुछ बताया। वैसे तो इस उपन्यास के तथ्य सुखराम के है। राघवजी ने उस तथ्यों का विस्तार किया है।

यह उपन्यास चार पीढ़ियों से सम्बन्धित है। सुखराम पेशा तो नटों का करता है, मगर अपने आप को ठाकुर मानता है। कुछ पीढ़ि पहले किले की मालकिन ठाकुराईन एक दरबारन के मुहब्बत में फँस गयी थी। किन्तु इसके गर्भ में ठाकुर वंश का अंकुर पल रहा था। बाद में ठाकुराईन मारी गयी। दरबारन ने उस बच्चे का लालन–पालन किया। बड़ा होकर वह बच्चा नट कहलाने लगा। सुखराम उसी ठाकुर खानदान का आखिरी ठाकुर है।

बचपन में ही सुखराम के माता–पिता स्वर्ग सिधार जाते है। इस कारण सुखराम इसीला नट के साथ रहने लगता है। कालांतर में इसीला की बेटी प्यारी से सुखराम की शादी हो जाती है। लेकिन सुखराम से विवाह होने के बावजूद भी प्यारी अन्य लोगों से अनैतिक सम्बन्ध

जोड़ती है। ठाकुर, चौकीदार, पुलिस आदि से प्यारी सुखराम की रक्षा करती है। वह उसकी रक्षक ही बन जाती है। प्यारी के माता–पिता भी उसे तन बेचने के लिए मजबूर करते है। इसी कारण सुखराम शराबी बन जाता है तथा प्यारी को साथ लेकर खेल दिखाता हे। जब कभी वह प्यारी के पास जाना चाहता है तो प्यारी कह देती है – "अभी नहीं मैं अभी थकी हूँ। अभी तो बौहरे का बेटा गया है।"[2] सुखराम प्यारी के ऐसे बर्तावों को पसन्द नहीं करता क्योंकि ठाकुर की बहू तन नहीं बेचती। सुखराम के ठाकुरेपन को ठेंस पहुँचती है। इस कारण दोनों में झगड़ा भी होता है। लेकिन प्यारी नटनी है उसके लिए अनेक पुरूषों से यौन सम्बन्ध रखना निषिध्द नहीं है।

प्यारी सुखराम को मन से चाहती है। प्यारी यहं नहीं चाहती की किसी दूसरी औरत सुखराम को **गंदी** दृष्टि से देखे या उस पर आसक्त हो जाये। प्यारी अपनी माँ को भी इस बारे में फटकारती है। सुखराम को प्यारी हर तरह का सुख देना चाहती है। दरोगा रूस्तमखाँ करनट की टोली और सुखराम को तंग करता है। अतः उनकी सुरक्षा के लिए प्यारी दरोगा रूस्तमखाँ की **रखैल** बनने का निर्णय करती है। सुखराम विरोध करता है परन्तु प्यारी उसे समझाती है। प्यारी के इस फैसले से दोनों भी बहुत दुःखी हो जाते हैं। उस रात दोनों भी चैन से नहीं सो पाते। प्यारी ड़रावने सपने देखती है तो सुखराम प्यारी में देवी रूप में दर्शन करता है।

प्यारी दरोगा रूस्तमखाँ के घर अकेले रहना नहीं चाहती। वह सुखराम को अपने साथ रहने के लिए कहती है। लेकिन सुखराम नौकर बनकर रहने से इन्कार करता है। सुखराम अकेला अपनी बस्ती में रहता है। रूस्तमखाँ के दबाव के कारण उसे कोई कुछ नहीं कहता। रूस्तमखाँ के घर बस जाने के के बाद प्यारी (की) चहल–पहल, खान–पान, पेहराव में बदलाव आ जाता है। प्यारी पहले से ज्यादा साफ–सुथरी रहती है। कभी–कभी सुखराम उसे मिलने जाता है। लेकिन प्यारी अकेले में भी उसे छूने नहीं देती। सुखराम के पूछने पर भी वह कुछ नहीं बताती। सिर्फ रेते हुए कहती है – मैं सिर्फ तुम्हारी हूँ। प्यारी के इस रहस्य को सुखराम समझ नहीं सकता।

सुखराम के पड़ोसी करनट मजे में रहते हैं। उनमें से एक कजरी है। कजरी दिखने में सुन्दर और शादीशुदा औरत है। लेकिन वह अपने पति **कुंरी** से ऊब चुकी है। कजरी हमेशा सुखराम के घर आकर उससे बातें करती है। सुखराम भी उससे अपना दुःख, दर्द बताता हे। जब कजरी प्यारी को गाँलियाँ देती या उसके बारे में बुरा कहती है तब सुखराम उस पर क्रोधित हो

जाता है। कजरी सुखराम का आदर करती है और उसे अच्छा **आदमी** मानती है। एक दिन कजरी अपने मन की बात सुखराम के सामने प्रकट करती है।

रूस्तनखाँ से सम्बन्ध जोड़कर तथा हुकूमत को पाकर प्यारी गर्व महसूस करने लगती है। प्यारी उन लोगों से प्रतिशोध लेना प्रारम्भ करती है जो नट–नटनियों को सताते हैं। ठाकुरों को रास्ते के भिखारी बनवाती है, निरोती बामन के घर आग लगा देती है। जब उसे सुखराम और कजरी के सम्बन्ध के बारे में पता चलता है तब उसका स्त्रियोचित स्वाभिमान जाग जाता है। वह सुखराम पर भड़क जाती है। उसके **मन** को ठेंस पहुँचती है। उसने जो किया सुखराम से पूछकर किया, परन्तु सुखराम उसके साथ विश्वासघात करता हे। प्यारी कजरी को गालियाँ देती है, उसे मारने की चेतावनी भी देती है। किन्तु वह मजबूर है। कुछ समय के पश्चात् प्यारी शान्त हो जाती है और कजरी से मिलने की इच्छा व्यक्त करती हैं। रूस्तमखाँ से सुखराम को पता चलता है कि उसे और प्यारी को यौन बीमारी ने ग्रस लिया है। यह बात सुनकर सुखराम का मस्तिष्क झनक उठता है। वह प्यारी के त्याग और प्रेम को समझ जाता है। सुखराम प्यारी और रूस्तमखाँ का इलाज करने के लिए राजी हो जाता है।

सुखराम कजरी के साथ विवाह करता है। सुखराम उसे प्यारी से मिलने के बारे में कहता है। किन्तु कजरी उसे मिलने से साफ इन्कार कर देती है। इसी बात को लेकर दोनों में झगड़ा भी हो जाता है। सुखराम उसे समझाता है। सुखराम के कहने पर कजरी प्यारी से मिलने के लिए राजी हो जाती है। वह खुद के लिए नये कपड़े खरीदती हैं। एक दिन सुखराम धूपों चमारिन की बाँके से रक्षा करता है। उस दिन से बाँकें ओर सुखराम की शत्रूता हो जाती है। बाँके बदला लेना चाहता है। मौका पाकर बाँके कुछ लोगों के साथ मिलकर सुखराम पर हमला करता है। सुखराम लहू–लुहान हो जाता है। चमार सुखराम को ड़ेरे पर पहुँचाते हैं। कजरी प्यारी के पास जाने की तैयारी कर रही थी। घायल सुखराम को देखकर स्तब्ध हो जाती है। उसकी समझ में नहीं आता कि क्या करे ? सुखराम को बेहोशी की हालत में छोड़कर वह प्यारी के पास जाती है और उसे सब कुछ बताती है। प्यारी बाँकें से बदला लेने के लिए उस पर कटार से वार करती है। लेकिन उसकी चाल नाकामयाब रहती है।

प्यारी के बीमारी को जानकर कजरी के मन में प्यारी के प्रति सहानुभूति पैदा होती है। कजरी और सुखराम कभी–कभी प्यारी से मिलने जाते हैं। वहाँ कजरी और प्यारी में शाब्दिक

विवाद भी होता। मगर उसमें स्नेह है। दोनों के मन में सुखराम के प्रति अटूट प्यार है। धूपों चमारिन अब प्यारी, सुखराम और बाँकें का किस्सा भूल जाती है। अपने बच्चों के साथ खुश रहत है। लेकिन कामांध बाँके धूपों को भूलता नहीं है। धूपों को अपने जाल में फँसाने का निर्णय बाँके लेता है। एक दिन संध्या समय सही मौका देखकर ठाकुर हरनाम और चरणसिंह की मदद से धूपों की अस्मत लूटता है। सुखराम कजरी को प्यारी के पास छोड़कर बाजार चला जाता है। बाजार से लौटते समय सुखराम रोती चिल्लाती धूपों को देखता है। धूपों के पास जाने पर उसे पता चलता है कि धूपों के साथ बाँके ने बलात्कार किया है। धूपों उसे भाई मानती है। इस रिश्ते से सुखराम उसे समझाने की कोशिशश करता है। किन्तु धूपों ने एक न सूनी, अपनी पवित्रता सिध्द करने के लिए आत्महत्या कर लेती है। धूपों के मौत के कारण चमारों में खलबली मच जाती है। चमार उत्तेजित हो जाते हैं। बाँके से बदला लेने की बात सुखराम मन में ठान लेता है। धूपों की लाश को सजाया जाता है। उसके बच्चे रोने लगते हैं। सुखराम के मन में विचार आता है कि उन बच्चों को अपनाकर उनका पालन करे। परन्तु वह कनरट है। चमार तो करनट से ऊँची जाती है। आखिर बिरादरी का सवाल है।

धूपों का सतीत्व खण्डित करने के पश्चात् बाँके बहुत खुश हो जाता है। वह अपने आप पर गर्व महसूस करने लगता है। यह खुशी की बात बताने वह रूस्तमखाँ के घर पहुँचता है। दोनों शराब के नशे में चूर होकर सुखराम और धूपों की निंदा करने लगते है। कजरी और प्यारी के बारे में घिनौनी बाते बकने लगते है। दोनों की बाते सुनकर दोनों भी क्रोधित हो जाती है। कजरी बाँके को प्यार के नाटक में फँसाकर मार डालती है। कजरी की लापरवाही से रूस्तमखाँ को इसका पता चलता है और वह दोनों के साथ लड़ने लगता है। प्यारी अपनी कटार रूस्तमखाँ के पेट में घूसेड़ देती है। आखिर नीचता पर उतर आये बाँके और रूस्तमखाँ दोनों का कत्ल कर दिया जाता है। प्यारी और कजरी आनंद विभोर हो जाती हैं। इसी वक्त बाहर कोलाहल मच जाता है। दोनों भी डर जाती है। वे भागने की कोशिश करती है। निरोती बामन रूस्तमखाँ के घर को आग लगाकर भाग जाता ताकि सारा इल्जाम चमारों पर आये। सुखराम उसे देखकर पहचानता है किन्तु उसे पकड़ नहीं सकता। लेकिन सुखराम के तर्क से वह निरोती बामन ही था। अतः सुखराम कजरी और प्यारी के साथ जंगल की तरफ भाग जाता है।

सुखराम, प्यारी, कजरी डांग जाने की बात तय करते है। जहाँ उनकी जाति के लोग रहते है। वहाँ उन्हें कोई खतरा नहीं है। प्यारी के पेट में दर्द होने लगा है क्योंकि रूस्तमखाँ ने

उसके पेट में लात मारी थी। सुखराम प्यारी को अपने पीठ पर लेकर चलने लगता है। रास्तें में उनकी भेंट डाकू खड़गसिंह से होती है। उसीसे आटा और गुड़ लेकर वे अपने पेट की भूख मिटाते हैं। तीनों डांग में करनटों की बस्ती में पहुँचते हैं। वहाँ उन्हें डेरा भी मिल जाता है। सुखराम प्यारी और कजरी के मना करने के बावजूद भी गाँव जाने निकलता है।

सुखराम चमारों की बस्ती में यह सोचकर जाता है कि वहाँ खचेरा मिलेगा और उससे सब पता चलेगा। लेकिन वहाँ जाते ही एक स्त्री बताती है कि खचेरा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसकी बीवी ने आत्महत्या कर ली है। पुलिस चमारों पर अत्याचार कर रही है। सुखराम उस स्त्री को वचन देता है वह इस अन्याय का जरूर बदला लेगा। सुखराम पुलिस थाने में जाता है। वह देखता है कि वहाँ अपराधी शराब पीकर आनंद मना रहे हें ओर उधर बेगुनाहों पर जुल्म किये जा रहे हैं। सुखराम थानेदार साहब के सामने सब की पोल खोल देता है। किन्तु सब मिलकर सुखराम की पीटाई करते हैं। उसी समय दरोगा के हाथों पिस्तौल से गोली छूँट कर किसी आदमी को लगती है। खून के इल्जाम में सुखराम को जेल में भिजवा दिया जाता है। जेल में करनट के राजा की मदद से वे दोनो भाग जाते हैं। राजा के छूट जाने की खुशी से जशन मनाते हैं। राजा सुखराम को अपना वजीर बनाता है। प्यारी को पैट दर्द बढ़ता जाता है। और इसी में ही उसकी मृत्यु हो जाती है। प्यारी की मृत्यु के कारण सुखराम के मन को गहरी चोंट लगती है। यह सद्मा वह बर्दाश्त नहीं सकता। परन्तु कजरी उसे संभाल लेती है।

सुखराम के मन में उन दरिंदों का बदला लेने की आग भड़क जाती है, जिन्होंने उन पर अन्याय किया था। उस पर झूठे इल्जाम लगाये थे। सुखराम जादूटोना करने वाले चंदन की मदद लेता है, मगर वह इसमें असफल रहता है। फिर सुखराम डाकू खड़गसिंह की सहायता से गाँव पर हमला करता है लेकिन इससे पहले ही दिवाणजी की कत्ल हो जाती है। दरोगा वहाँ से चला जाता है। सुखराम और कजरी अब एक अलग जिन्दगी जीना चाहते है। चोरी के बजाय मजदूरी करके अपना गुजारा करना चाहते हैं।

एक दिन संध्या समय कजरी और सुखराम जंगल में टहलने जाते हैं। इस समय उन्हें एक औरत की चीख सुनाई देती है। डाकू खड़गसिंह और उनके साथी एक मेम को पकड़कर उसके साथ जबरदस्ती करना चाहते है। सुखराम उन डाकुओं के चंगुल से मेम की रक्षा करता है। इसके बदले में मेम सूसन सुखराम और कजरी को अपने घर में नौकरी देती है। अब दोनों का जीवन

बदल जाता है। उन्हें अब न कोई ड़र रहता है न ही पेट की चिन्ता। हिंदुस्थान में आकर सूसन अपने आप को अकेली महसूस करती है। किन्तु सुखराम के कारण वह खुश रहने लगती है। एक अंग्रेज युवक लॉरेन्स वहाँ आ जाता है। सूसन के पिता उसे अपने परिवार का सदसय समझकर अपने घर में रहने की इजाजत देते हैं। लेकिन लॉरेन्स नियत से बूरा आदमी है।

कजरी माँ बननेवाली है। अतः वह अपने आप पर गर्व महसूस कर रही है। उसे एक नया एहसास हो रहा है। वह अपनी कल्पनाओं में व्यस्त रहती है। सूसन के पिता कही बाहर जाते हैं। सुखराम भी कही चला जाता है। ऐसा सुनहरा मौका पाकर लॉरेन्स सूसन के साथ बलात्कार करता है। कजरी उसे छुड़ाने जाती है। किन्तु लॉरेन्स गर्भवती कजरी के पेट पर लात मारता है जिसके कारण वह बेहोश हो जाती है। ओर उसक गर्भपात हो जाता है। वृध्द अंग्रेज के आने के पश्चात् सुखराम उसे सब कुछ बता देता है। वृध्द लॉरेन्स को बुरी तरह पीटता है और उसे युरोप भेजता है। सूसन गर्भवती हो जाती है। बूढ़ा अंग्रेज अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा एवं इज्जत से ड़रता है। अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा की खातिर सूसन के पिता सूसन को कजरी ओर सुखराम के साथ बम्बई के एक अस्पतला में भेजता है। बम्बई में कजरी बीमार पड़ जाती है ओर इसी में ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

सूसन एक लड़की को जन्म देती है। उस बच्ची को सुखराम को सौपकर वह अपने देश चली जाती है। सुखराम उस बच्ची को लेकर गाँव चला आता है। उसे कजरी की बेटी बताकर उसका पालन–पोषण करने लगता है। सुखराम उस बच्ची का नाम चंदा रखता है। चंदा बड़ी होने पर गाँव के ठाकुर के बेटे नरेश से प्रेम करने लगती है। लेकिन चंदा एक नटनी की बेटी होने के कारण ठाकुर दोनों का प्रेम अस्वीकार करता है। ठाकुर चंदा का शोषण करता है तथा अनेक तरह की यातनाएँ देता है। सुखराम चंदा के यातनाओं को सह नहीं सकता। आखिर वह चंदा की शादी नीलू नामक नट से कर देता है। परन्तु नरेश और चंदा के प्रेम में कोई अन्तर नहीं आता। चंदा नरेश को भूल नहीं सकती। ससुराल से भागकर चंदा मायके चली आती है। उस वक्त बुढ़े अंग्रेज का खत भी आता है जिससे चंदा को जीवन के रहस्य के बारे में पता चलता है। चंदा उस अधूरे किले की तरफ पागलों की तरह भागने लगती है। सुखराम अस्वस्थ हो जाता है। वह चंदा को बेहद चाहता है तथा उसका सुख भी चाहता है। लेकिन सुखराम जानता है कि नरेश और चंदा के मिलन से ही वह असल में सुखी हो सकती है। किन्तु ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि दोनों में जातीयता की दीवार खड़ी है। अन्त में अत्यन्त विक्षुब्ध होकर सुखराम चंदा को मार डालता है।

सुखराम को जेल की सजा हो जाती है। चंदा की मौत के कारण नरेश भी पागल हो जाता है।

डॉ.राघवजी ने इस उपन्यास का नाम पहले "अधूरा किला" रखा था। लेकिन बाद में यह नाम बदलकर "कब तक पुकारूँ" यह नाम रख दिया। "कब तक पुकारूँ" इस नाम में एक अत्यन्त करूण पुकार है जो अन्त तक बनी रहती है। इस उपन्यास की कथा पुलिस की बर्बरता, अन्याय, अत्याचार, बलात्कार, नारी **शोषण** यौन बीमारी, उच्च वर्ग की कामलिप्सा, मारपीट, गर्भपात आदि के कारण कलुषित है तथा उच्चवर्ग ओर सभ्य समाज पर कड़ा व्यंग्य कसती है। प्यारी की शारीरिक एवं मानसिक दयनीय अवस्था सभ्य समाज के कारण ही है। सुखराम सदा सभ्य समाज तथा उच्च वर्ग में से होने का सपना देखता है। किन्तु ये उच्चवर्ग के लोग नीच से भी नीच हो रहे है।)

"मुर्दों का टीला" उपन्यास का कथानक

डॉ.रांगेय राघव का "मुर्दों का टीला" यह महत्वपूर्ण कल्पना मिश्रित ऐतिहासिक उपन्यास है। उपन्यास के आरम्भ में नायक मणिबन्ध का गौरवशाली ओर वैभवपूर्ण चित्र अंकित किया है। मोअन-जो-दड़ों का महाश्रेष्ठि मणिबन्ध जो मिश्री वृध्द आमेन-रा से प्रेरित होकर मोअन-जो-दड़ो में गणतंत्र शासन प्रणाली की जगह साम्राज्यवादी शासन प्रणाली की स्थापना के हेतु मिश्र के अमाप धन-सम्पति लेकर लौटता है। मणिबन्ध के साथ मिश्री वृध्द आमेन-रा, दासी हेका, नीलूपुर, एवं दास अपाप तथा अन्य खरीदे हुए दास-दासिंय हैं। सिंधु नदी पर उनका जहाज तैर रहा है। दासी नीलूफर अत्यन्त सुन्दर एवं कमनीय है। जहाज में ही श्रेष्ठि मणिबन्ध नीलूफर को अपनी स्वामिनी के रूप में स्वीकार करता है। नीलूफर बहुत-ही खुश है क्योंकि वह हाट में बिकनेवाली दासी थी। लेकिन अब स्वामिनी बनी है। जहाज से उतरने के पश्चात वह गुलाम के रूप में नहीं तो स्वामिनी के रूप में पहचानी जाएगी। मणिबन्ध के मन में भी महत्वकांक्षा जाग जाती है कि ज्यो मणिबन्ध गरीब दरिद्र था वह महाश्रेष्ठि मणिबन्ध बनकर लौट रहा है। तीर नजदीक आ जाता है। मल्लाहों का गीत भी समाप्त हो रहा है। जहाज पर एक अजीब खलबली मच जाती है। काले दास-दासियों को छोड़कर सभी अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक वस्त्र और आभूषण पहनते हैं। हेका नीलूफर के पास आकर "स्वामिनी" कहकर पुकारती है। नीलूफर लज्जित हो जाती है

क्योंकि दोनों भी दासियाँ, बचपन की सहेलियाँ है। और दोने भी नंगी होकर हाट में बिकने के लिए खड़ी हुई थी। मणिबन्ध उन्हें खरीदता है सिर्फ फर्क इतना है कि नीलूफर अपने सौन्दर्य एवं यौवन से मणिबन्ध को जीत कर स्वामिनी बनती है और हेका दासी ही रहती है। लेकिन नीलूफर के लिए अब भी हेका बचपन की सहेली है।

कीकट देश की नर्तकी वेणी और गायक विल्लिभित्तुर अपने प्रेम की रक्षा करने के लिए मोअन–जो–दड़ो महानगर में आ जाते हैं। अपना पेट भरने के लिए दोनों नृत्य–गान करते हैं। मोअन–जो–दड़ो में हर साल महासुन्दरी का निर्वाचन किया जाता है। महानगर की सुन्दरियाँ सज–धज कर अभिसार के लिए सिंधु नदी के तट पर आ जाती है। महाश्रेष्ठि मणिबन्ध ओर वृध्द आमेन–रा भी इस जल अभिसार के लिए आ जाते है। उस समय मणिबन्ध की दृष्टि वेणी पर पड़ती है। वेणी के ओर आकर्षित होकर मणिबन्ध उसे जल अभिसार के लिए आमंत्रित करता है। गायक विल्लिभित्तुर वेणी से प्यार करता है। उसके प्रेम में समर्पण है। वह स्त्री स्वतंत्रता के पक्ष में है। वह स्त्री को बन्धनों में जखड़ना नहीं चाहता। लेकिन वेणी के प्यार में अतृप्तता, तृष्णा है। उस कारण वह मणिबन्ध की ओर आकर्षित हो जाती है। **नीलूफर** अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर मणिबन्ध को जीत लेती है। अत: उसका मणिबन्ध पर जो एकाधिकार है वह खोना नहीं चाहती। वेणी की ओर मणिबन्ध का आकर्षण देखकर नीलूफर जलने लगती है। कोई भी औरत कभी भी यह नहीं चाहती कि उसके अधिकार में और कोई औरत हिस्सेदार बने। नीलूफर का जलना स्वाभाविक है क्योंकि उसका मणिबन्ध पर जो अधिकार है उसे वेणी लूटने की कोशिश करती है। नीलूफर मन से अत्यन्त व्यथित एवं पीड़ित रहती है। वह सोचती है कि स्वामिनी के जीवन की अपेक्षा दासी जीवन अच्छा है। हेका दासी होकर अपाप उसके साथ एकनिष्ठ रहता है। उस पर हेका का एकाधिकार है। मगर **नीलूफर** एक कीड़ा है जो हवा के झोके से महल में आकर पड़ता है, लेकिन बाद में उसे मणिबन्ध गंदी नाली में फेंक देगा। नीलूफर के मन की तड़पन सिर्फ हेका और अपाप ही समझ सकते हैं। वेणी को समझाने के बारे में नीलूफर विल्लिभित्तुर से कहती है। किन्तु वह नहीं समझा सकता। नीलूफर द्वेष एवं प्रतिशोध की भावना से विल्लिभित्तुर की ओर झुक जाती है। इस कारण वेणी और नीलूफर में आंतरिक वैमस्य की भावना बढ़ने लगती है।

एक दिन महामाई के उत्सव पर्व में वेणी मणिबन्ध के साथ रहती है। नीलूफर के स्थान पर वेणी बैठ जाती है। मणिबन्ध के आग्रह पर वेणी नृत्य करने लगती है। **सब** लोग अवाक

होकर देखते रहते हैं। नीलूफर भी देखती है और वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। वेणी के गलत नृत्य के बारे में नीलूफर चिल्लाकर कहती है। वह वेणी की कला को चुनौती देती है। नीलूफर गाने लगती है और वेणी नृत्य करती है। नीलूफर वेणी को पराजित कर देती है। किन्तु गायक विल्लिभित्तुर के बीच में आने के कारण जीत वेणी की होती है। गायक विल्लिभित्तुर अपने प्यार को जीतने की अन्तिम चेष्टा करता है। नृत्य समाप्त होते ही सब लोग वेणी का जयजयकार करने लगते हैं। धीरे–धीरे जनसमुदाय घटने लगता है। विदेशी अतिथि मदिरापान कर मदमस्त हो जाते हैं। वेणी भी उनके साथ मग्न रहती है। विल्लिभित्तुर नशे में चूर वेणी को देखता है। परन्तु वेणी एक बार भी उसकी तरफ नहीं देखती। इसके पश्चात् नीलूफर विल्लिभित्तुर से मिलती रहती है। नीलूफर बार–बार गायक को समझाती है कि वेणी को भूलकर उसे अपना ले। लेकिन विल्लिभित्तुर प्रेम के कारण विवश हो जाता है। वह किसी का द्वेष नहीं कर सकता। एक दिन विल्लिभित्तु के रात के समय सिंधु नदी के तट पर मिलने का वचन लेती है। मणिबन्ध वेणी को पाने के लिए षड़यंत्र रचता है। वह जानता है कि गायक विल्लिभित्तुर अब भी वेणी को बेहद चाहता है तथा वेणी मणिबन्ध से भौमिक सुख चाहती है किन्तु गायक विल्लिभित्तुर को हमेशा के लिए छोड़ना नहीं चाहती। वेणी के मन में गायक के प्रति घृणा एवं नफरत पैदा करने के लिए उसे कहता है, कि गायक वेणी के प्रेम को भूल चुका है, वह बेवफा है। गायक नीलूफर से प्यार करता है। जिससे वेणी क्रोधित हो जाती है। वह मणिबन्ध की बातों पर विश्वास कर लेती है। वेणी धोकेबाज **गायक** को खतम करना चाहती है तथा मणिबन्ध की स्वामिनी बनना स्वीकार करती है। वेणी के मन में प्रतिशोध की आग भड़क जाती है। मणिबन्ध के कहने पर वह गायक हत्या करने के लिए तैयार हो जाती है। वेणी को उत्तेजित करके मणिबन्ध गायक विल्लिभित्तेर के पास जाता है। दर्दभरे शब्दों में वह गायक को याचना करता है कि वह वेणी के प्राणों की रखा करें क्योंकि वेणी गायक के प्रति एकनिष्ठहै वह गायक को एक बार मिलनाचाहती है। अगर गायक उसे नहीं मिला तो वह आत्महत्या कर लेगी। इस बात को सुनकर गायक ड़र जाता है। उसके मन में वेणी के प्रति आदर भावना बढ़ती है। अत:वेणी की रक्षा के लिए गायके उसे मिलने का वादा मणिबन्ध से करता है। मणिबन्ध मन–ही–मन खुश हो जाता है। वेणी ओर गायक दोनों को भी इस षड़यंत्र का पता नहीं चलता।

मणिबन्ध के षड़्यंत्र को नीलूफर पहचानती है। नीलूफर निरापराध **गायक** को **बचाना** चाहती है। वेणी और नीलूफर गायक से मिलने के लिए तैयारी करने लगती हैं। गायक के सानने अपने वैभव का प्रदर्शन करने के लिए वेणी हर तरह का साजश्रृंगार करती है। ऊँचे वस्त्र एवं आभूषण पहनती है। परन्तु नीलूफर कोई भी साजश्रृंगार नहीं करती। वह बहुत–ही सीधे वस्त्र पहनती है। नीलूफर हेका को साथ लेना चाहती है इसलिए वह हेका को ढूँढती है। हेका बैल का मॉस खाने में व्यस्त रहती है। उसका ध्यान नीलूफर की ओर नहीं जाता। नीलूफर के पूछने पर हेका बताती है कि उसे बैल का मॉस उसकी सेवा के बदले अक्षय प्रधान से मिला है। हेका के इस बर्ताव पर नीलूफर को तरस आता है। हेका उसे पिछली जिन्दगी की याद दिलाती है। नीलूफर सिहर उठती है। उसे आज भी मल्लाहों की वह रात याद है। उसके मन को चोट लगती हैं। वह सोचने लगती है कि हेका कितनी निर्बल है, जो चाहे उसके शरीर के साथ कभी–भी खेल सकता हैं। हेका के साथ शक्तिशाली अपाप होकर भी वह कुछ नहीं कर सकता, वह तो एक पशु के समान है। वेणी के कुचक्र से नीलूफर गायक विल्लिभित्तुर के प्राणों की रक्षा करती है। इसके पश्चात् नीलूफर अपने प्रकोष्ठ में न जाकर हेका के कक्ष में रहने लगती है। वेणी भी लापता रहती हैं। मणिबन्ध का मन बेचैन हो जाता है।

दो दिनों के बाद मणिबन्ध को वेणी असह्या स्थिति में मिल जाती है। परन्तु नीलूफर का कुछ पता नहीं चलता। होश में आने पर वेणी मणिबन्ध को जो कुछ घटित हुआ इसके बारे में बताती है कि नीलूफर के कारण वह अपनी चाल में नाकामयाब रहती है। इस हादसे के पश्चात् वेणी वहाँ से भाग जाती है। कुछ समय बाद गायक उसे मिलता है। गायक वेणी और मणिबन्ध की प्रताड़ना करता है तथा नीलूफर की सराहना करता है। वेणी की बाते सुनगर मणिबन्ध तड़प उठता है। मणिबन्ध नीलूफर की तलाश करने का हुकूम अपने सैनिक ओर गुलामों को देता है। सब जगह नीलूफर को तलाश किया जाता है। मणिबन्ध तथा उसके आदमी नीलूफर के खून के प्यासे हो जाते हैं। मणिबन्ध हेका और अपाप हो भी नीलूफर के बारे में पूछता है क्योंकि दोनों नीलूफर के बचपन के दोस्त है। लेकिन नीलूफर की रक्षा करने के लिए वे झूठ बोलते हैं। **नीलूफर** दिन भर पुआल में पड़ी रहती है और संध्या के समय वेषांतर करे घूम आती है। नीलूफर का गायक होना सभी के लिए रहस्यमय बन जाता है। नीलूफर हेका के कक्ष में रहती है इसलिए हेका अपने कक्ष में किसी को आने नहीं देती। वह सतर्करहती है। कभी–कभी अन्य पुरूष के साथ रातें बिताती है। नीलूफर के लिए हेका के कक्ष में ज्यादा दिन रहना असम्भव हो जाता है क्योंकि अब उसकी

तलाश पहले से ज्यादा हो जाती है। नीलूफर अपने कारण हेका और अपाप को खतरे में डालना नहीं चाहती। हेका और नीलूफर दोनों भी दु:खी हो जाती हैं। हेका उसे सांत्वना देती है।

नीलूफर अहिराज के उत्सव के दिन पुरूष वेश धारण करके उत्सव में जाती है। उत्सव सुरू हो जाता है। लेकिन बीच में ही कीकट देश की राजकुमारी चंद्रा बर्बर आर्यों से पीड़ित और पराजित होकर अपने कुछ द्रविड़ साथियों के साथ मोअन–जो–दड़ो महानगर में आश्रय के लिए आ जाती है। द्रविड़ी नागरिकें पर हुए अत्याचारें को चंद्रा चिल्ला–चिल्लाकर कहने लगती है। किन्तु उत्सव में इकठ्ठा हुए व्यापारी, सुमेरू योध्दा और श्रेष्ठि मणिबन्ध चंद्रा के दर्दभरे कथन को मजाक का विषय मानककर खिलखिलाकर हँसने लगते हैं। जन–समुदास में कोलाहल मच जाता है। मौका देखकर वेणी दोबारा गायक विल्लिभित्तुर की हत्या करने की कोशिश करती है। लेकिन वेणी की गलती से तथा नीलूफर की चतुराई से दूसरे ही किसी व्यक्ति की हत्या हो जाती है। उस समय भी नीलूफर गायक को बचाती है। इसके पश्चात् गायक और नीलूफर वहाँ से भागकर एक कुटियाँ में पति–पत्नी की तरह रहने लगते हैं। गायक के मन की महानता, सहानुभूति को जानकर नीलूफर गायक को मन–ही–मन अपने पति के रूप में स्वीकार करती है। गायक भी नीलूफर के अंदर की नारी को पहचानता है। दोनों अपने घर में असहाय कीकट देश की राजकुमारी चंद्रा को आश्रय देते हैं। नीलूफर की जीवन में जिस सुख की तलाश रहती है, गायक को पाकर वह तलाश पूरी होती है। गायक उसे अपना लेता है। नीलूफर, गायक और चंद्रा तीनों मिलकर नृत्य–गान करके, सपेरें का खेल दिखाकर जो कुछ रूखा–सूखा मिलता है उसीसे अपना पेट भरते हैं। उन्हें किसी भी बात का न ड़र रहता है, न बन्धन। वे स्वच्छंद रूप से अपना जीवन–यापन करते हैं।

आमेन–रा मणिबन्ध को सम्राट बनाना चाहता है। किन्तु गण–परिषद इस प्रस्ताव को ठुकरा देती है। आमेन–रा और मणिबन्ध गणतंत्रात्मक शासन–प्रणाली के बजाय साम्राज्यवादी शासन प्रणाली की स्थापना के हेतु नयी सेना एवं दास इकठ्ठा करने लगते हैं। नीलूफर अपनी सहेली हेका से मिलने आती है। तब वह नीलूफर को मणिबन्ध की सेना के बारे में कहती है। परन्तु नीलूफर अब इन बातों में जरा भी दिलचस्पी नहीं रहती। वह गायक के साथ सुखपूर्ण जीवन बिताना चाहती है। गण–परिषद पर मणिबन्ध के सैनिक आक्रमण करते हैं। सैनिक और मोअन–जो–दड़ो के नागरिकों में संघर्ष होता है। नागरिकों पर अत्याचार होने लगते हैं। गण–परिषद का गणपति भी

मारा जाता है। मणिबन्ध को सैनिक महानगर में उत्पात मचाते हैं। गणसदस्य और नागरिक त्रस्त हो जाते है। अतः नागरिकों की सुरक्षा के लिए गणसदस्य मणिबन्ध से संधि करने का फैसला करते हैं। दूत के रूप में गणसदस्य चंद्राहस की बेटी षोड़शी को भेजा जाता है। किन्तु मणिबन्ध और आमेन–रा गणसदस्यों के साथ छल करते हैं। षोड़शी को बंदी बनाया जाता है। सैनिक नागरिकों पर आक्रमण करते रहते हैं। माँ के सामने बच्चे को जिन्दा जलाया जाता है। औरतों की इज्जत लूट ली जाती है। आखिर मणिबन्ध की महत्वकांक्षा फलद्रूप हो जाती है।

विश्वजित जो पहले इस महानगर का महाश्रेष्ठि थी। किन्तु वैभव, धन–सम्पत्ति के लुट जाने से वह पागल की तरह महानगर में दर–दर भटकता है। वह हमेशा अन्यायों के खिलाफ आवाज उठाता है। लोग उनके कथन से ड़रते हैं किन्तु उसे पागल समझकर उसकी गुस्ताखकी को क्षमा किया जाता है। इस रणसंग्राम में भी विश्वजित सच्चाई को प्रकट करता है। लेकिन मणिबन्ध के सैनिक उसे घायल कर देते है। घायल विश्वजित को देखकर गायक और चंद्रा व्यथित हो जाते हैं। दोनों इस अत्याचार एवं दमन नीति का विरोध करने का निश्चय करते हैं। लेकिन नीलूफर इस फैसले को स्वीकार नहीं करती क्योंकि गायक के प्रेम के कारण उसके मन में जीवन के प्रति मोह बढ़ने लगता है। गायक क्रोध्ति होकर **नीलूफ़र** को चाटा मारता है और उसे कायर एवं मृतक कहता है। जिसके परिणामस्वरूप नीलूफर की चेतना जाग जाती है। वह भी प्रतिशोध की बात मन में ठान लेती है। वेशांतर करके नीलूफर दासों के मन में विद्रोह की भावना जगाती है। दास भी मनुष्य होते हैं इस बात का एहसास दासों को कर देती है। महानगर के नागरीक, दास–दासियाँ, द्रविड़, के पीड़ित लोग सब विद्रोह करने लगते हैं।

अक्षय प्रधान हेका का शारीरिक एवं मानसिक शोषण करता है। किन्तु बर्दाश्त करने की भी हद देती है। हेका उसका विरोध करती है। और अपाप अक्षय प्रधान की हत्या कर देता है। इसके पश्चात् हेका और अपाप नीलूफर के घर भाग जाते हैं। मणिबन्ध के सैनिक महानगर में कोहराम मचा देते हैं। रक्तपात होने लगता है। अतः नागरीक गायक विल्लिभित्तुर को अपने सेनापति के रूप में चुन लेते हैं। नीलूफर किसी भी हालत में गायक को अपने से जुदा नहीं करना चाहती। गायक का जीवित रहना नीलूफर का सर्वस्व है। उसकी जान नीलूफर के लिए बहुत कीमती है। अतः वह कोई भी हिंसात्मक युध्द नहीं चाहती। नीलूफर जानती है कि मणिबन्ध की

सेना सशस्त्र है। इस सेना के सामने नागरिकों की हार निश्चित हैं। मणिबन्ध नागरिकों को दास बना देगा। हजारों बेगुनाहों की जान बचाने के लिए अकेले मणिबन्ध की हत्या कर देना उचित है। अत: युध्द रोकने के लिए नीलूफर पुरूष वेश में वेणी के पास यह आशा लेकर जाती है कि वेणी अपने पुराने प्रेमी के प्राणों के लिए इस युध्द को रूकवा देगी अथवा आसानी से मणिबन्ध की हत्या कर देगी। नीलूफर वेणी से कहती है – "गायक। .... आकाश से भी अधिक पवित्र है। मणिबन्ध और गायक की कोई तुलना नहीं। मणिबन्ध धन का लोलुप भेड़िया है, वह कभी-भी मनुष्य के हृदय की महानता को नहीं पहचान सकता। मुझसे बार-बार हेका कहा करती थी कि नीलूफर । स्वामिनी होकर तू कहीं मुझे भूल न जाना। नहीं भूली मैं उसे कभी-भी, क्योंकि स्वामिनीत्व का पिशाच कभी भी मेरा गला नहीं घोंट सका। आज वही हेका विद्रोह में आगे चल रही है। ..... आज चंद्रा जो एक दिन अपने राजवंश की ज्वाला में जल रही थी, भिखारिणी बनकर द्रविड़ो का नायकत्व कर रही है और तू ? तू यहाँ इस बर्बर के यहाँ मदिरा पी रही है? जैसे वे सब तेरे कोई नहीं? दासों का द्रविड़ों का, महानागरिकों का एक स्वर गूँज उठा। किन्तु मैं घृणा करती हूँ स्त्री। मैं इस युध्द को नहीं चाहती। तू मणिबन्ध की हत्या कर सकती है। सहस्त्रों निरपराधों का रक्तपात नहीं होगा .... वह सब तो नि:शस्त्र से हैं। उसे बचा ले स्त्री। उसके जीवन की रक्षा करना आज तेरे हाथ का खेल है..।"[3]

नीलूफर वेणी की प्रताड़ना करती है तथा उसे समझाती है कि वह वेणी के अधिकार के सामने नहीं झुकी बल्कि एक पीड़ित स्त्री को सचेत करने आयी है। मणिबन्ध वेणी को सम्राज्ञी के रूप में स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि वह रास्ते पर नाचनेवाली नर्तकी है। वह कुलीन नहीं है। किन्तु वेणी नीलूफर की बातों पर विश्वास नहीं करती क्योंकि उसकी आँखों पर धन-सम्पत्ति का पर्दा था तथा वह मदिरा के नशे में चूर हो जाती थी। अत: नीलूफर को वेणी से कोई सहायता नहीं मिलती। महल से निकलते वक्त आमेन-रा के हाथों से नीलूफर मारी जाती है। अपाप आमने-रा की हत्या कर देता है। वह नीलूफर का सह हाथों में लेकर वहाँ से भागने लगता है। परन्तु वह रास्ता भूल जाता है और गलती से वेणी के महल में पहुँचता है। वहाँ वेणी के सैनिकों द्वारा अपाप की हत्या होती हैं। हेका और चंद्रा भी युध्द में मारी जाती है। केवल गायक विल्लिभित्तुर बच जाता है। मणिबन्ध के सैनिक विद्रोही को कुचलने लगते हैं। विद्रोही के सेनापित विल्लिभित्तुर को बंदी

बनाता है। दरबार में मणिबन्ध के साथ वेणी भी उपस्थित रहती है। न्यायसभा गायक को प्राणदण्ड की सजा सुनवाती है। महानागरिक दु:ख से विव्हल हो जाते है तथा गायक का जयजयकार करते हैं। वेणी के आँखों के सामने गायक को फाँसी के फंदे पर लटकाया जाता है। किन्तु वेणी कुछ नहीं कर सकती। सिर्फ देखती रहती है।

पागल विश्वजित मणिबन्ध की हत्या करन के लिए महल में छिप जाता है। वेणी और मणिबन्ध मदिरापान करने लगते है। मणिबन्ध अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में वेणी को बताता है कि वह एक गरीब काश्तकार सिंधुदत्त था। मोअन-जो-दड़ो में पल रहा था। लेकिन दु:ख से अभिभूत होकर वह मिश्र में भाग जाता है। वहाँ वह कठोर परिश्रम ओर बुध्दि चातुर्य से अपार सम्पत्ति का संचय करता है। मोअन-जो-दड़ो में वापस आकर वह महाश्रेष्ठि बन जाता है।

मणिबन्ध की इन बातों से विश्वजित समझ जाता है कि मणिबन्ध उसका पुत्र है। लेकिनप् विश्वजित उसे अपना पुत्र नहीं कह सकता क्योंकि मणिबन्ध आत्याचारी एवं हजारों, लाखों निरपराध व्यक्तियों का हत्यारा है। वेणी मणिबन्ध की असलीयत को जान जाती है। उससे तंग आकर तथा उससे घृणा करके वेणी भागने लगती है। गायक का प्रेम तथा उसकी महानता को वेणी पहचानती है और उसे पुकारने लगती है। मणिबन्ध भी वेणी के पीछे भागने लगता है। विश्वजित की ममता अपने पुत्र के प्रति जाग जाती है। वह मणिबन्ध को रोकना चाहता है। लेकिन मणिबन्ध को अपने पिता विश्वजित की बातें अच्छी नहीं लगती। पिता-पुत्र के छूटने-पकड़ने की कोशिश में विश्वजित की छाती में छुरा घुस जाता है। विश्वजित उसे पुत्र कहकर अपने प्राण त्याग देता है। मणिबन्ध समझ जाता है विश्वजित उसका पिता है। अत: पिता की हत्या से उसके मन में पाप की घृणित भावना जाग जाती है। उसे एहसास होता है कि उसने जो किया केवल स्वार्थ के लिए ही। अत: मणिबन्ध की सम्राट होने की अभिलाषा सिंधु नदी की बाढ़ में बह जाती है। प्रलय उस बर्बर वैभव का अन्त कर देता है। मणिबन्ध अपनी रक्षा के लिए भागने लगता है, किन्तु उसे कोई नहीं बचाता। प्रकृति विद्रोही रूप धारण करती है। प्रकृति का प्रकोप सारे महानगर को निगल जाता है। सत्य की रक्षा के लिए स्वयं प्रकृति असत्य का विनाश करती है।

डॉ.रांगेय राघवजी ने आलोच्च उपन्यास "मुर्दों का टीला" में प्रागैतिहासिक कालीन घटना को लेकर अपनी कल्पना से कथानक का निर्माण किया है। उपन्यास के पात्र भी काल्पनिक

है। इस उपन्यास में मुख्यतः पीड़ित दासी नारी जीवन का चित्रण किया है। उपन्यास के पात्र एक दूसरे को गतिशील बनाते हैं। पात्रों का व्यक्तित्व पूर्व निश्चित है। उपन्यासकार ने जीवन के विविध पक्षों को विभिन्न दृष्टियों से देखा है। उपन्यास में चित्रित नारी सम्बन्धी धारणा पुरूष दृष्टि सापेक्ष है। उस काल में समाज में नारी की जो स्थिति थी उसे उपन्यास में यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

आ) जन–जातियों का जीवन–यापन

प्रस्ताविका

धरती पर निवास करनेवाले प्रत्येक मानव का एक विशिष्ट जीवन होता है। उसके जीवन में अनेक विभिन्नताएँ एवं विचित्रताएँ होती हे। मानव जीवन की निश्चित परिभाषा करना बहुत ही मुश्किल काम है। डॉ.शशिभूषण सिंहल ने जीवन की परिभाषा इस तरह करने की कोशिश की है – "जीवन का अर्थ शरीरधारी, मानव में प्राणों का अस्तित्व उसके जन्म से मृत्यु तक का काल। जीवन गतिशील है, वह एक यात्रा है, जिसका आरम्भ जन्म है और मंजिल मृत्यु है।"[4] जीवन में सुख–दु:ख, घृणा, प्रेम, चढ़ाव–उतार होते हैं। जीवन बहती धारा है जो एक जगह से निकलकर मार्ग में आनेवाली बाधाओं एवं कठिनाइयों का सामना करते हुए अन्त में सागर से मिल जाती है। मानव–जीवन विविध क्रिया–कलापों से परिपूर्ण होता है। उसके यह क्रिया–कलाप वातावरण पर निर्भर होते हैं। उपन्यास और मानव जीवन का गहरा सम्बन्ध है। अत: उपन्यास में उस युग के मानव जीवन का चित्रण रहता है। आँचलिक उपन्यास में किसी विशिष्ट अंचल की जन–जातियों का जीवन चित्रण रहता है। ऐतिहासिक उपन्यास में विगत की पृष्ठभूमि का आधार लेकर कल्पना के आश्रय से ऐतिहासिक जीवन को सजीव रूप दिया जाता है। अत: मानव को जीवन जीने के लिए कई कार्य–व्यापार करने पड़ते है। वह अपना जीवन यापन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक धरातल के दायरे में करता है। यहाँ हमे आलोच्च उपन्यासों में चित्रित जन–जातियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन यापन का विवेचन करता है –

क) सांस्कृतिक जीवन–यापन

संस्कृति और समाज का अत्यन्त गहरा एवं परस्पर पूरक सम्बन्ध रहा है। समाज को संचलित तथा नियंत्रित करने का कार्य संस्कृति करती है। प्रत्येक समाज के अपने सांस्कृतिक मूल्य रहते हैं। सांस्कृतिक आदर्श का व्यवहारिक रूप संस्कार होता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज से संस्कार ग्रहण करता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सांस्कृतिक परिवेश का गहरा प्रभाव रहता है। "संस्कृति का व्यापक अर्थ किसी समाज की जीवन–पध्दति से है जिसमें उसकी कला, शिल्प, विश्वास, मान्यताएँ, मूल्य, जीवन, जीवन–दर्शन, संस्कार, प्रथाएँ, धर्म आदि सब समाहित है।"[5] अतः सांस्कृतिक जीवन–यापन में रूढ़ि, प्रथा, परम्पराएँ, उत्सव, पर्व, तीज, त्यौहार, लोकगीत, लोककथा, मनोरंजन के साधन आदि का समावेश होता है।

1) रूढ़ि, प्रथा, परम्परा

भारतीय जन–जीवन पूर्णतः रूढ़ि, परम्पराओं से बध्द है। मानव के प्रत्येक क्रिया–कर्म पर रूढ़ि परम्पराओं की गहरी छाप रहती है। किसी भी क्रिया–कर्म को जब समाज की मान्यता मिलती है तब वे क्रिया–कर्म समाज के लिए प्रथाएँ बनाती हैं। किसी भी प्रथा के मूल में जब उपयोगिता एवं सामाजिक कल्याण की भावना विद्यमान रहती है तब यह प्रथा रूढ़ि का रूप धारण कर लेती है। रूढ़ियों में धार्मिक अंधविश्वास का अस्तीत्व रहता है। समाज में अनेक ऐसी रूढ़ियाँ होती है, जिसका पालन सामाजिक एवं धार्मिक दबाओं के कारण किया जाता है। मानव मन में रूढ़ियों के प्रति विश्वास ओर आस्था रहती है। व्यक्ति रूढ़ियों के प्रति अनास्था ओर अविश्वास दिखाकर धार्मिक विश्वासों को ठेंस नहीं पहुँचना चाहता। कभी–कभी परम्परा अपरिवर्तित नियम में बदल जाती है तब यह परम्परा सामाजिक शोषण का कारण बन जाती है। कई रूढ़ियाँ, परम्पराएँ क्रूर एवं समाज घातक होकर भी उनका पालन सोच–समझकर न होकर हस्तांतरण के रूप में होता है। जैसे की दहेज प्रथा, बहुविवाह, बलि–प्रथा, बेजोड विवाह आदि।

आलोच्य उपन्यास "कब तक पुकारूँ" में कई रूढ़ि एवं परम्पराओं का चित्रण मिलता है। यह रूढ़ि, परम्पराएँ जन–जीवन के लिए हानिकारक होकर भी लोगों द्वारा उनका पालन हो रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित निम्न जातियों की रूढ़ि, परम्पराएँ उच्च जाति के रूढ़ि,

परम्पराओं से भिन्न है। करनट जाति में यह परम्परा थी कि जब उनकी लड़की जवान हो जाती तो उसे ठाकुर के साथ रात बितानी पड़ती थी। इसके पश्चात् उस लड़की को यह जाति अपना लेती थी। इनकी औरते दैहिक विक्री करती है। एक प्रति को छोड़कर दूसरे के घर बस जाती है। मर्द भी कई औरतों के साथ विवाह करते हैं। विवाह संस्कार में ब्राह्मण को नहीं बुलाया जाता। शादी–ब्याह आपस में किया जाता है। प्यारी सुखराम के होते हुए रूस्तमखाँ के घर बस जाती है। कजरी कुर्री को छोड़कर सुखराम से शादी करती है। सुखराम की दो बीबियाँ है तो हरिजन चंदन की पाँच बीबियाँ है। भंगी और चमारों में पितृसत्ताक पध्दति का गहरा प्रभाव है। भंगियों की सात से अधिक बीबियाँ होती हैं। उनमें परम्परा है कि औरतों को सदा सुहागन रखा जाता है। बड़े भाई की बीबी छोटे भाई की भी बीबी बन जाती है। चमारों में विधवा नारी की इज्जत लूटने पर उसे समाज से अलग किया जाता है। धोबियों में यह परम्परा है कि अगर उनके घर की बहू पूरब की है तो वे अपनी बेटी को पूरब में नहीं देगें बल्कि पश्चिम में देंगे। करनटों में जड़ी–बुटी विद्या पिता द्वारा बेटे को ही मिलती है। इस रहस्य के बारे में किसी को भी बताया नहीं जाता। सुखराम को यह विद्या अपने पिता से प्राप्त हुई, लेकिन वह किसी के सामने इसका भेद नहीं खोलता। राजा और ठाकुरों को देवता समान माना जाता है। पुलिस अफसर किसी नटनी की ओर आकर्षित हुआ तो उसे उसके साथ जाना पड़ता है।

"मुर्दों का टीला" उपन्यास में दास–प्रथा का चित्रण मिलता है। श्रेष्ठि, व्यापारी अपने धन के बल पर दास–दासियों का क्रय–विक्रय करते हैं। दास सजीव होकर भी उनसे स्वाधीनता छीन ली जाती है। इन्हें अपने स्वामी के इशारों पर नाचना पड़ता है। दासियों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण किया जाता है। दास–दासियाँ इसे अपनी किस्मत समझते हैं। मोअन–जो–दड़ो महानगर में हर साल महासुन्दरी का निर्वाचन करने की प्रथा हैं। शादी किये बिना औरतों को अपने घर में पत्नी के रूप में रखा जाता है। श्रेष्ठि मणिबन्ध नीलूफर ओर वेणी से विवाह किये बिना अपने घर में रखता है। गायक और नीलूफर शादी के बिना पति–पत्नी की तरह अपना घर बसाते हैं। कीकट के राजा की कई पत्नियाँ है। गणपति का चुनाव गणप्रतिनिधि द्वारा किया जाता है। युध्द के समय शान्तिदूत के रूप में गणदस्यों के छोटे बच्चे तथा उनमें से किसी एक की कन्या को भेजने की परम्परा है। श्रेष्ठि मणिबन्ध से संधि करने के लिए गणसदस्य चंद्रहास की बेटी षोड़शी को भेजा जाता है। वंशवृध्दि के लिए कुलीन नारी से विवाह करने की प्रथा है। श्रेष्ठि मणिबन्ध

शादी तथा वंशवृध्दि के लिए आमेन–रा कुलीन लड़की षोड़सी को बंदी बनाता है। योगी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गाँवों में किसी जवान स्त्री की बड़ी बेरहमी से बलि देने की प्रथा का प्रचलन हैं।

2) उत्सव–पर्व–तीज–त्यौहार

भारतीय समाज में प्राचीन काल से त्यौहारों का महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। उसे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। त्यौहार मनाने के पीछे मूल धार्मिक भावना रहती है। "जिस धार्मिक समारोह में लोगों को हर्ष, आनंद और मनः प्रसाद की अनुभूति मिलती है उसे "उत्सव" कहा जाता है।"[6] उत्सव की निर्मिती कई उद्देश्यों के कारण हुई है, जैसे मानव मन की पीड़ा, व्यथा से मुक्ति देना, सामुहिक आनंद प्राप्ति, संस्कृति का ज्ञान देना, जीवन में चेतना जागृति करना, आपसी मेल जोल बढ़नाना, मानसिक शान्ति प्राप्त करना, सामाजिक संघटन के लिए, देशप्रेम विकसित करना, धार्मिक शिक्षा देना, श्रम से छुटकारा पाना आदि। अतः समाज एवं व्यक्ति के विकास के लिए उत्सव महत्वपूर्ण रहे हैं। उत्सव–पर्वों के साथ श्रध्दा, धार्मिक अंधविश्वास जुड़े हुए हैं।

"कब तक पुकारूँ" की जन–जातियों में संस्कृति का ज्ञान देने के लिए तथा मन की पीड़ा से मुक्ति के लिए होली, दिवाली आदि त्यौंहार बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। करनटों की टोली का नायक जेल से छूटने के पश्चात् सामुहिक आनंद प्राप्ति के लिए जशन मनाया जाता है। राजाजी जेल से छूट जाने की खुशी में डांग में करनट नृत्य–गान करके मदिरापान, गोश्त पकाकर जशन मनाते हैं।

"मुर्दों का टीला" में मोअन–जो–दड़ों महानगर के नागरिक कई धार्मिक उत्सव–पर्व मनाते हैं। जैसे महागाई, अहिरराज की पूजा। इन उत्सव पर्व में महानगर के सभी नागरिक, गणसदस्य तथा धनिक, व्यापारी वर्ग शामिल होते हैं। देवी–देवताओं की प्रार्थना कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। इस उत्सवों के कारण देशी–विदेशी व्यापारियों में आपसी मेल–जोल बढ़ता है तथा व्यापार में वृध्दि हो जाती है।

3) लोकगीत

"लोकगीत" का सामान्य अर्थ है, लोकविषयक या लोकनिर्मित गीत। इस गीत का प्रचलन लोगों में होता हैं। किसी विशिष्ट समय में लोकगीत विशेष मात्रा में प्रचलित रहते हैं। लोकगीतों के द्‌वारा लोकसंस्कृति तथा भौगोलिक सामग्री का ज्ञान होता है। मानव मन का दु:ख, दर्द, हर्ष आदि भावनाओं को लोकगीतों द्‌वारा व्यक्त करता है। लोकगीत मनोरंजन का भी साधन है। "मानव जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जो लोकगीतों में व्यक्त नहीं हुआ। मानव के मातृगर्भ में स्थान पाने के साथ ही इन गीतों का आरम्भ हो जाता है एवं अन्त उसकी मृत्यु के पश्चात् होता है।"[7] लोकगीत छोटे और लम्बे भी होते हैं। लोकगीत स्त्री अथवा पुरूष गाते हैं। कभी–कभी दोनों मिलकर भी गाते हैं। किसी भी देश की नैतिकता एवं सामाजिक आदर्शक लोकगीतों में सुरक्षित रहते हैं। इनमें युग–युग की परिवर्तित बोलियों का समावेश रहता है।

"कब तक पुकारूँ" में व्यथा के गीत, वसंत ऋतु के आगमन के गीत, विरह गीत, नृत्य–गीत, खुशियाँ मनाने के गीत, ध्वनि गीत आदि लोकगीतों का समावेश है। कुछ लोकगीत बहुत ही सुन्दर है, जैसे व्यथा से भरा हुआ गीत निम्नांकित है –

"आज चांदणी है । आज मैं तेरे पास सोऊँगी, मुझे
चंदा से ड़र लगता है।
ओ चंदा की सी कामिनी तू जिसमें से जन्मी है, तुझे
उसी से ड़री क्यों लगता है बावरी।
ओ साजन, मुझे हँसुली बनवा दो, इस चन्दा में इतना सोना
चांदी है इन्हें जाकर कटवा दो नं ?
दरोगा क्या तुम्हें इसके गहने बनवाने पर भी पकड़ लेगा?
प्यारी वह बड़ा निरदयी होता है। वह मेरा दुश्मन नहीं है।
वह चन्दा का
रखवाला भी नहीं है, असल में उसकी आँख तेरे जोबन
पर लगी है।"[8]

प्यारी रूस्तमखाँ के घर जाते समय सुखराम और प्यारी दोनो भी बहुत दु:खी हो जाते हैं। अपने मन की पीड़ा, विरह भावना गीत द्‌वारा व्यक्त करते हैं। यह विरह गीत इस प्रकार है –

"ऐरे मै आग में जली जा रही हूँ, हाय मेरे बलम
तू कहाँ चला गया। पहाड़ के धौ सूख गए हैं। ऐसे
मेरी चाहना भी सूख गई है, पर मेरा हिया देख,
इसमें क्या है ? तू झै पर्वत पै धूनी रमाए बैठी है।
जोगी ! आ मेरे मन की धूनी तो देख जा।
तेरी धूनी मुझे जलाती है तो मन जलता है, यह
धूनी जलाती है तो तन गलता है । प्यारी ! तेरे
बिना मुझे जोग भी नहीं सुहाता।
प्यारे ! मैं जानती हूँ, तुझे मुझसे प्रीत नहीं हे।
मुझे तो चमकती बिजलियों से सूनापन लग रहा है।
तू जब मोरनी के पास मोर नाचता देखता है तो तेरी
हूक उठती हे । ---- तू तो फिर ऐसे ही चला
जाएगा जैसे ये सावन के मेघ चले जाएंगे, फिर
जब सरद आएगी तब मैं ओर आसमान दो ही
तो धरती पर आँसू गिराने को रह जाएंगे ?-----
मुझसे कसम ले ले प्यारी । --- मैं जोगी तो तेरे
लिए बना हूँ प्यारी ! तू ही मेरी सब कुछ है।"[9]

"मुर्दो का टीला" में नृत्यगीत ध्वनिगीत, मल्लाहों का गीत, व्यथा से परिपूर्ण गीत आदि का समावेश है। एक दासी अपने बेटे के मरने के बाद उसकी याद में अपने मन की पीड़ा गीत द्‌वारा प्रकट करते हुए अपने मन को शान्त करने का प्रयास करती है –

"एक दिन तू बड़ा होता मेरे लाल ! तू मेरी गोदी में बड़ा होगा।
श्रेष्ठि तुझे नहीं बेचता। वह मान जाता, मेरे आँसूँ उसे पिघला देते
तब तू और मैं गाय और उनके बछड़े की भाँति खड़े रहते।"[10]

इस तरह आलोच्य उपन्यासों में लोकगीतों द्वारा लोग अपना दु:ख, दर्द, हर्ष आदि को व्यक्त करते हैं। लोकगीत में मानव अपने मन की भावना व्यक्त करता है। आलोच्य उपन्यासों में राघवजी ने लोकगीतों का अनुदित रूप परिनिष्ठित हिंदी में गद्य के रूप में दिया है। फिर भी अनुदित रूप द्वारा लोगों के मन की अलग–अलग भावनाओं का परिचय हो जाता है।

4) लोककथा

लोककथाएँ अलिखित रूप में होती हैं तथा लोगों में उसका अधिक प्रचलन रहता है। लोककथाएँ परम्परा, विश्वास, आस्था के आधारपर प्रचलित रहती है। अस्वस्थता, अशान्ति के समय लोगों को लोककथा के माध्यम से प्रेरणा एवं स्फूर्ति मिलती है। भारत में प्राचीन काल से लोककथाएँ चली आ रही हैं। संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र, हितोपदेश, जातककथा आदि कई कथा संग्रह है।

"कब तक पुकारूँ" में अनेक लोककथाओं का चित्रण किया है। कजरी द्वारा कही गयी राजा के विश्वासघात की कथा महत्वपूर्ण तथा करनट जाति के जीवन से सम्बन्धित है। एक दिन कजरी और सुखराम घूमने जंगल जाते हैं। उन्हें एक छतरी दिखाई देती है। कजरी सुखराम को उस छतरी की कहानी बताती है – एक राजा था, उसने घोषणा की जो व्यक्ति एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक रस्सी बाँधकर जाएगा उसे आधा राज्य मिल जाएगा। एक नटनी ने रस्सी बाँधकर चढ़ना शुरू किया। नटनी को पहड़ो के बीच में आ गयी। राजा ड़रने लगा यदि नटनी सफल हो गयी तो उसे आधा राज्य देना पड़ेगा। राजाने रस्सी काट दी। नटनी गिर गयी। नटनी की याद में राजा ने वहाँ उसका स्मारक बनवाया। सुखराम के पूर्वजों की कथा। अधुरे किले की मालकिन ठाकुराइन नीच जाति के दरबान से प्यार करती है ओर उसके साथ भाग जाती है। उस समय उसके पेट में ठाकुर का वंश पल रहा था। ठाकुराइन के मरने के बाद दरबान उसे बच्चे को संभालता है। अत: वह बच्चा नट कहलाने लगता है। सुखराम भी उसी ठाकुर खानदान से सम्बन्धित है। दीना भड़जियो द्वारा कही गयी रहस्यमय तथा रोमांचकारी कथा। यवन के राजा अपनी राजकुमारी को अकेला छोड़कर राजकुमार के साथ कही चला जाता है। वजीर राजकुमारी की ओर आकर्षित होता है। राजकुमारी इन्कार कर देती है। बादशाह के आने पर वजीर राजकुमारी को बदलचन

साबित करता है। बादशाह उसे मारने का हुक्म देता है। राजकुमारी बहन के कत्ल के बजाय बक्स में रखकर छोड़ देता है। चीन के शहजादे को बक्स मिलता है। वह उस राजकुमारी के साथ निकाह करता है। कोरनियाँ के कहने पर शहजादा अपनी पत्नी और बच्चे को उसके मैके भेजता है। रास्तें में मंतरी की नियत बदल जाती है। राजकुमारी भाग जाती है। बच्चा मार दिया जाता है। राजकुमारी साधू बन जाती है। शहजादा बारात लेकर यवन जाता है। रास्ते में साधू से भेंट होती है। वह सब कुछ बताता ह। साधू को साथ लेकर कुँबर पहुँचता है। दुल्हन वजीर की बेटी होती है। कुँवर विचलित होता है। साधू अपनी पहचान बताता है। अन्त में कुँवर और राजकुमारी का ब्याह हो जाता है।

"मुर्दों का टीला" में मोअन–जो–दड़ो महानगर की औरते अपने बच्चों को महादेव और महामाई की कथा सुनाती हैं।

5) मनोरंजन के साधन

मानव जीवन सुख–दुःख से मिश्रित है। जीवन की बाधाओं से वह त्रस्त हो जाता है। अपने दुःख, दर्द, पीड़ा, श्रम से वह छुटकारा पासना चाहता है। अपने मन को शान्त करने के लिए तथा आनंद के लिए वह पल भर क्यों न हो मनोरंजन करना चाहता है। प्राचीन युग से आज तक मानव मनोरंजन के आधार पर अपना जीवन सुखद ढंग से गुजारने की कोशिश करता है।

"कब तक पुकारूँ" और "मुर्दों का टीला" में मनोरंजन के साधन के रूप में कामपूर्ति, नृत्यगान, मदिरापान आदि का सहारा लिया गया है। सुखराम दिन भर की थकावट के कारण प्यारी का साथ चाहता है। उसका नृत्यगान देखना चाहता है। शराब पीता है। कजरी के साथ जंगल में टहलने जाता है। लॉरेन्स और सूसन शराब पीते हैं, क्लब में जाते हैं।

आमेन–रा और मणिबन्ध मन की अस्वस्थता हटाने के लिए मदिरापान करके नृत्यगान देखते हैं। किसी दासी से अपनी कामपूर्ति करते हैं। जल अभिसार के लिए जाते हैं। वेणी अपने दुःख भूलाने के लिए शराब की नशे में डूबी रहती है।

आलोच्य उपन्यासों में मनोरंजन के लिए कोई तांत्रिक साधन उपलब्ध नहीं है। इस कारण उपरोक्त माध्यम के द्वारा अपने मन को बहलाना चाहते हैं।

ख) सामाजिक जीवन–यापन

मानव समाजप्रिय प्राणी है। समाज में रहकर ही वह अपना जीवन–यापन करता है। अत: मानव को सांस्कृतिक जीवन–यापन के साथ–साथ सामाजिक जीवन यापन करना पड़ता है। सामाजिक जीवन–यापन के अंतर्गत देवी–देवता सम्बन्धी मान्यताएँ, व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति, अंधविश्वास, जातिव्यवस्था, वेशभूषा तथा खानपान, बोलचाल आदि के बारे में सोचा जा सकता है।

1) देवी–देवता सम्बन्धी मान्यताएँ

भारतीय समाज में कई देवी–देवताओं को माना जाता है। इसका कारण धर्मांधता ही है। असम्भव या इच्छित फल पाने के लिए लोग मनौतियाँ चढ़ाते हैं। धर्म का क्षेत्र मानवीय ज्ञान एवं आत्मसाक्षात्कार है। इसके माध्यम से आदिमानव ने विश्व तथा सृष्टि के रहस्यों को समझने की कोशिश की है। "ईश्वर अपना (जो दर्शन और विज्ञान का भी विषय है। समस्त मानवीय विकास तथा हमारे आदर्शों का एक सांघनिक रूप है। ईश्वर हमारी वैचारिकता की अन्तिम परिणति है जिसके आगे हम कदापि सोच नहीं सकते।"[11]

"कब तक पुकारूँ" में लोग शिवलिंग, पीर, भैरव, ईदगाह, गढ़ैयावाला हनुमान तथा स्थानिक देवताओं की उपासना करते हैं। प्यारी ड़रावना सपना देखती है तब सुखराम महादेव, पीर, हनुमान, ईदगाह आदि देवताओं को मनौति चढ़ने की बात सोचता हैं। प्यारी की बीमारी हटाकर उसे स्वस्थ बनाने के लिए सुखराम और कजरी शिवलिंग की प्रार्थना करते हैं।

"मुर्दों का टीला" में लोग जीवन की सफलता के लिए सर्प, महादेव, महामाई, सूर्य, अहिरराज आदि देवताओं की पूजा, प्रार्थना तथा उपासना करते हैं। मिश्री दासियाँ नीलूफर एवं हेका ओसिरिस को दया की याचना करती हैं।

देवी–देवताओं की पूजा प्रार्थना से मानव मन को शान्ति एवं प्रेरणा मिलती है। लेकिन लोग उनकी अपार सत्ता के बारे में श्रध्दा के बजाय अंधविश्वास रखतें है। यह मानव जीवन के लिए हानिकारक है।

2) व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

व्यवसाय और अर्थव्यवस्था का गहरा सम्बन्ध है। आदिमानव अपने जीवन यापन के लिए वस्तुविनिमय करता था। आगे चलकर आदिमानव का विकास हुआ। वस्तुविनिमय के स्थान पर पैसों की निर्मिती हुई। जीवन यापन के लिए पैसों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी समाज के लोग अपने आसपास के भौगोलिक एवं सामाजिक वातावरण के अनुसार व्यवसाय करते हैं। अतः समाज के व्यवसाय के आधार पर उस समाज की आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

"कब तक पुकारूँ" उपन्यास में चित्रित जन–जातियाँ राजस्थान के पहाड़ी आँचल नें निवास करनेवाली हैं। करनट जाति के लोगों के पास व्यवसाय के लिए कोई साधन नहीं है। उन्हें खेती–बाड़ी भी नहीं है। अतः यह लोग जीवन यापन के लिए चोरी करना, भीख माँगना, खेल–तमाशा दिखाना, सूप बनाना, मोर की ढ़लैया बनाना, खिलौने बनाना, शब्द, जड़ी–बुटी, कस्तुरी, सांडा, सींग आदि इकठ्ठा करके बेचते हैं। उनकी महिलाएँ पैसे कमाने के लिए ऊँची जाति के लोगों को (जैसे – पुलिस, ठाकुर, ब्राह्मण, बौहरे आदि) तन बेचती है तथा उनकी रखैल बनती हैं। प्यारी, कजरी, बेला, सौनो जीवन यापन के लिए उनकी तन का सौदा करती है। धूपो चमारिन गोबर के काण्डे बनाती है एवं खेतों में काम करती है।

"मुर्दों का टीला" में धनिक व्यापारी जलपोतों के द्वारा विदेशी व्यापार करते हैं तथा महानगर की समृध्दि को बढ़ाते हैं। दास–दासियों का क्रय–विक्रय करते हैं। दासियाँ इन धनिकों की गुलाम बन कर अपना शरीर बेचती है। नीलूफर ओर हेका अच्छा खाना पाने के लिए मल्लाहों के साथ रात बिताती हैं। बैल का माँस, फल तथा स्वादिष्ट भोजन के लिए हेका अक्षय प्रधान को बार–बार अपना तन समर्पित करती है। वेणी, चंद्रा, गायक विल्लिभित्तुर नृत्यगान द्वारा अपना जीवन यापन करते हैं।

3) वेशभूषा एवं खान–पान

किसी भी समाज के लोगों का खान–पान एवं वेशभूषा वहाँ स्थित भौगोलिक वातावरण के अनुसार होती है। "कब तक पुकारूँ" में करनट जाति के पुरूष सिर पर साफा, गले में मफरल एवं मालाएँ, खुले गले का कोट तथा धोती पहनते हैं। हाथ में काँच के कड़े पहनते हैं। बड़ी–बड़ी मूछे रखते हैं। उनकी औरतें घाघरा, फरिया पहनती है। आँखें में काजर लगाती है। नाक में बुल्लाक पहनती है। करनटों का खान–पान बहुत–ही साधारण है, ज्यादा तर ये लोग मद्यपान करते हैं, बीड़ी पीते हैं, पान चबाते हैं, गोश्त खाते हैं। कभी–कभी आटे की रोटियाँ और गुढ़ खाते हैं।

"मुर्दों का टीला" में धनिक, व्यापारी महीन सूत के वस्त्र पहनते हैं। गले में मुक्ताहार, सुवर्ण बाहुबन्ध, सिर पर हीरो जड़ित मुकुट पहनते हैं। दास–दासियाँ बहुत ही साधारण सूत के वस्त्र पहनती हैं। गले में तांबे के आभूषण तथा तांबे के बाहुबन्ध बाँधते हैं। धनिक, व्यापारियों की औरते रत्नजड़ित आभूषण पहनती है। नीलूफर ऐसे वस्त्र पहनती है कि उसका आधा शरीर खुला रहता है। महानगर की कुलीन महिलाएँ तथा युवतियाँ रंग–बिरंगे वस्त्र, हस्तीदंत के आभूषध, कटी पर मेखला, कानों में मुक्ता के गुच्छ, हाथों में कंकण पहनती है। माथे पर कुंकम लगाती हैं। ये लोग शराब पीते हैं तथा बैल या अन्य प्राणियों का माँस, फल आदि खाते हैं।

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित जातियों की वेशभूषा एवं खान–पान अपनी–अपनी हैसियत के अनुसार है। मदिरापान तथा गोश्त यही इनका प्रमुख खान–पान हैं।

4) अंधविश्वास

मानव अपना जीवन यापन संस्कृति की सहायता से करता है। मानव जीवन पर संस्कृति का गहरा प्रभाव रहता है। भौतिक अभौतिक संस्कृति का असर धर्म पर रहता है। समाज जीवन यापन में अंधविश्वास और धर्म सम्बन्ध है। "अंधविश्वासों का उद्‌गम मानव मन का एक अभियान है। इसका कारण है कि आदिमानवीय विकास स्थिति में अंधविश्वास एक ऐसी दशा की ओर संकेत

करते हैं कि, जब मानव नामधारी प्राणी की मानसिक शक्ति, प्रकृति तथा विश्व के प्रति एक जिज्ञासा, कौतुहल तथा भय की मिली–जुली मनोवृत्ति का परिचय देती हैं।"[12] मानसिक दुर्बलता, अशिक्षा, अज्ञान, धर्म का भय आदि के कारण अंधविश्वासों का प्रचलन होता है। अंधविश्वासों के कारण लोग अशोभनीय कार्य करते हैं। नारियों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण किया जाता हैं।

"कब तक पुकारूँ" में राजस्थान में स्थित "वैर" गाँव में निवास करने वाले करनट तथा अन्य जातियों के अंधविश्वासों को स्पष्ट किया है। इस गाँव की जातियाँ अशिक्षित, अज्ञान है। इनकी मनोवृत्ति रूढ़िवादी है। यहाँ का सामाजिक परिवेश विषम है। आदि कई कारणों से अंधविश्वासों को बल मिला है। जैसे – पुत्र प्राप्ति के लिए सात शनिचर के दिन आग लगाना, मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति का भूत बनना, इच्छापूर्ति के लिए पुनर्जन्म लेना, बीमारी हटाने के लिए ताबीज बाँधना, मंत्र का प्रयोग करना, साधु बाबा द्वारा दी गयी राख मलना, साँप द्वारा गुप्त धन की रक्षा करना, गोरखी द्वारा साप का जहर उतारना, देवी–देवताओं को बलि चढ़ाना, प्रतिशोध लेने के लिए जादू–टोना करना आदि। अतः उपन्यासों में चित्रित जन–जातियाँ कई अंधविश्वासों में घिरी हुई हैं। इन लोगों में यह विश्वास है कि अधूरे किले में भूत–प्रेत निवास करते है। वहाँ की धनराशी की रक्षा साप करता है। जादू विद्या प्राप्त होने से व्यक्ति को विपुल वैभव प्राप्त होता है। ये लोग जादू–टोना करनेवाले लोगों का सम्मान करते हैं तथा उन्हें ड़रते हैं। चंदन ऐसे ही जादू–टोना करने वाला हरिजन पात्र है। सुखराम अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए चंदन के पास जाकर मरघर में मुर्गे की बलि देता है। सुखराम मानता है कि ठाकुराइन अधूरी इच्छा को पूरा करने के लिए बार–बार जन्म लेती है। चंदा की मृत्यु के पश्चात् सुखराम महसूस करता है कि उसने ठाकुराइन की हत्या की।

"मुर्दों का टीला" में मोअन–जो–दड़ो के अमीर लोगों से लेकर सामान्य नागरिक भी अंधविश्वासी और धर्मांध हैं। ये लोग किसी भी लाभ को दैवी वरदान मानते हैं तथ हानि को दैवी प्रकोप मानते हैं। इस प्रकोप से बचने के लिए महामाई, अहिरराज, महादेव, सूर्य, सर्प आदि की सत्ता को स्वीकार करते हुए उनकी पूजा, उपासना, प्रार्थना तथा उत्सवों का नियोजन करते हैं। बुरे कर्म करने पर महामाई, अहिरराज, महादेव से ड़रते हैं। श्रेष्ठि मणिबन्ध अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण महामाई को अपने पापों से मुक्ति की याचना करता हैं। मिश्री लोग ओसिरिस, आईसिस देवता को मानते हैं तथा उसके प्रकोप से ड़रते हैं। नीलूफर, हेका ओसिरिस से दया की भीख

माँगती हैं। मोअन–जो–दड़ो के एक गाँव में नीलूफर और हेका देखती है कि योगीराज की कृपा प्राप्त करने के लिए स्त्री की पाशविक बलि दी जाती है। गाँव के लोग बड़े चावसे देखते हैं।

5) जातीय भेदभावना

भारतीय समाज में विविध जाति, धर्मों का वास्तव है। प्राचीन काल से "जाति संस्था" का प्रचलन रहा हे। जाति संस्था की जड़े इतनी मजबूत है कि कई परिवर्तन, कानून होने पर भी वह अपना अस्तित्व बनाएँ रखती है। जाति संस्था प्रमुख दो विभागों में विभाजित है – ऊँची तथा नीच जाति। ऊँची जाति के लोग नीच जातियों के लोगों का शोषण करते हैं। जातीय भेद, भावना के कारण समाज में शोषण की अटूट दीवार खड़ी हुई है। नीच जातियों के साथ पशुका–सा बर्ताव किया जाता है। उन्हें धार्मिक सामाजिक कार्यों में से बहिष्कृत किया जाता है। छुआछूत के कारण इनका जीवन जिन्दा लाश की तरह बीत जाता है। इन पर घोर अन्याय, अत्याचार, जुल्म किये जाते हैं। अपनी ऐसी स्थिति को ये लोग अपना भाग्य समझते हैं। समाज में इसका कोई मूल्य नहीं होता। इनकी औरतें ऊँची जाति के पुरूषों के लिए मनोरंजन का साधन है। ऊँची जाति के लोग नीच जाति के लोगों के सब अधिकारों को अपनी मुट्ठी में बन्द करते हैं तथा उन्हें कठपुतली बनाकर अपने इशारे पर नचाते हैं। लेकिन नीच जाति के लोग अपने शोषण का विरोध नहीं कर सकते।

"कब तक पुकारूँ" में करनट जाति व्यवस्था तथा अन्य जातीय भेदभाव पर प्रकाश डाला है। करनट जयरामपेशा कहे जाते है। नट और करनट में थोड़ा–सा अन्तर है। करनटों में छुआछूत नहीं चलती, नटों में चलती है। गाँव के जाति बस्ती की रचना में भी भेदा–भेद हैं – गाँव के बाहर चमार बस्ती स्थित है, इसके बाद भंगियों की बस्ती है, जंगलों में करनट की बस्ती है। चमार, भंगियों एवं करनटों को नीच मानते हैं तथा अपने–आप को श्रेष्ठ मानते हैं। इस कारण घूपो चमारिन की मृत्यु के पश्चात् सुखराम उसके बच्चे को अपना नहीं सकता। गाँव के अन्य जाति जैसे – ठाकुर, ब्राह्मण, चमार, भंगी करनट जाति को तुच्छ समझते हैं। छुआछुत के बावजूद नीच जाति की नारियों से ऊँची जाति के पुरूष शरीर सम्बन्ध रखते हैं। सुखराम जातीयता का प्रतिकार करता हुआ कहता है – "जन्म से आदमी नीच नहीं होत करम से होता है।"[13] सुखराम के इस कथन में जातीय भेदभावना के विरोध में मार्क्सवादी विचारधारा के दर्शन होते हैं। जातीय भेदाभेद

के कारण चंदा का विवाह ठाकुर के बेटे नरेश से नहीं हो सकता। जिससे चंदा को अपने प्राणों की आहुती देनी पड़ती हैं।

"मुर्दों का टीला" में मोअन-जो-दड़ों की गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली में सभी नागरिक समान थे। किन्तु मिश्री संस्कृति के आगमन से महानगर में जातीय भेदाभावना बढ़ने लगती है। मिश्र की दास प्रथा का प्रचलन महानगर में होने लगता है। श्रेष्ठि, व्यापारी लोग दासों की जीवन चेतना को मिटाते हैं। वे दासों को गुलाम एवं पशु समझते हैं। उन पर अमानुष अत्याचार करते हैं। दासियों को अपनी वासना पूर्ति का साधन मात्र समझते है।

6) बोलचाल

किसी भी समाज की अपनी बोली भाषा होती है। जन-जातियों के जीवन-यापन में बोलचाल का महत्वपूर्ण स्थान है। आलोच्य उपन्यासों में चित्रित पात्रों की बोलचाल, कहावते, मुहॉवरो, शब्द प्रयोग आदि द्वारा जन जीवन सच्चा सजीव और यथार्थ लगता है।

"कब तक पुकारूँ" में पात्रों के वार्तालाप तथा वर्णन में ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया है जिससे आँचलिकता स्पष्ट होती है। प्रस्तुत उपन्यास में अश्लील गालियों का प्रयोग किया है। करनट नीच जाति है। अतः इस जाति में अश्लील शब्दों का प्रयोग करने से अनुचित नहीं माना जाता। गालियों का प्रयोग भद्दा नहीं बल्कि स्वाभविक है। जैसे – निगोड़ी, छिनाल, दाईमारी, सत्तुरी, कुतिया, साले मुँहजले, नासपीटे हरामी, हरामजादी, कढ़ीखाए दारी, डेढ, रंडी, डेढ़नी, हरजाई, चुडैल आदि अपशब्दों का प्रयोग हुआ है।

कुछ मुँहावरे, कहावतों का भी प्रयोग हुआ है जैसे – झोपड़ो में रहकर महलों का सपना देखना, कुँआ प्यासे के पास जायेगा कि प्यासा कुएँ के पास, लातों के देव बातों से सीधे नहीं होते, बात का बतंगड करना, बगुला अगर भगत बनेगा तो भी विलैया भगनित नहीं छोड़ेगी, दिया बले मरद मानुस धर में भले, छाती पुला-पुलाकर गुनगुनाता, बिरद्वान पहुँचना, नकेल भी डाले रहे और उल्लू भी बनाए, राग रंडावा तो तब काटे जग रंडुआ उसे काटने दे, तिरलोकी दीखना, टेढ़ी खीर बनाना आदि।

जिनावर (जानवर), साच्छी (साक्षी), दरौपदी (द्रोपदी), झिड्डियाँ (सीढ़ियाँ), पून्यों (पोर्णिमा), हेंकार (अहंकार), बखत (वक्त), पुलस (पुलिस), पे (पर), सूका (शुक्रतारा), दौज (द्वितिय), लैन (लेने), जगार (जागरण), दुसमन (दुश्मन), समरिया (सावरियाँ), लुगाई, (पत्नी),)सान (मशाल), खुस (खुरा), सराफत (सावरियाँ), संतोस (संतोष), भगमान (भगवान) आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। कुछ अंग्रेजी और उर्दु शब्दी भी उपन्यास नें पाए जाते है जैसे अस्पताल, रपट, डॅाक्टर, गवरमन्ट आदि।

"मुर्दों का टीला" ऐतिहासिक उपन्यास है। अतः इस उपन्यास में उस युग के अनुरूप शब्द का प्रयोग किया है जिससे उपन्यास की ऐतिहासिकता स्पष्ट होती है। जैसे – महाश्रेष्ठि, प्रसाद, प्रकोष्ठ, कक्ष, पुआल, स्वामी, स्वामिनी, सम्राज्ञी, राजकुमारी, वृषभ, सारथी, रथ, मदिरा, गण, मुद्रा, सम्राट, देव, देवी, दास, दासी, महाप्रभु, महामाई, शान्तिदूत, गणपति, गणपरिषद आदि।

निष्कर्ष

आलोच्य उपन्यास "कब तक पुकारूँ" का मूल उद्देश्य है – खानाबदोश जयरामपेशा करनटों के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना। उपन्यास में प्रमुख तत्व कथ्य है। कथ्य को स्पष्ट करने के लिए कथानक आवश्यक है। कथानक कई प्रकार के होते है। "कब तक पुकारूँ" आँचलिक उपन्यास है। अतः इसमें विशिष्ट प्रदेश (राजस्थान में स्थित वैर गाँव) तथा वहाँ निवास करनेवाली जातियों का यथातथ्य वर्णन किया है। इस उपन्यास में आधिकारिक और प्रासंगिक दोनों प्रकार की कथाएँ है। सुखराम, प्यारी, कजरी, रूस्तमखाँ आदि पात्रों के इर्द गीर्द घूमने वाली कथा आधिकारिक कथा है तो घूपो, बेला, सूसन, डाकू खड़गसिंह, चंदा आदि कथाएँ प्रासंगिक है। किन्तु इस प्रासंगिक कथाओं का आधिकारिक कथाओं से सम्बन्ध रहा है। अतः इस कथानक नें घटनात्मक सत्यता, प्रबंध पटुता दिखई देती है।

आलोच्य ऐतिहासिक उपन्यास "मुर्दों का टीला" का मूल कथ्य है – ऐतिहासिक उपन्यास का निर्माण एवं उसके प्रतिबन्धों की सोमा में मार्क्सवादी दर्शन को व्यक्त करना तथा वर्तमान

77

के समाधान के लिए अतीत में झाँकना। इस उपन्यास के कथानक में सांस्कृतिक पक्ष अधिक उभर कर आया है। मोअन–जो–दड़ो की तत्कालीन संस्कृति और धार्मिकता का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। इस उपन्यास की कथानक एवं पात्र काल्पनिक है किन्तु वर्णनशक्ति के कारण उसमें यथार्थता दिखाई देती है।

प्रस्तुत उपन्यासों में चित्रित जन–जातियों के सांस्कृतिक जीवन यापन में रूढ़ि–प्रथा–परम्पराएँ, उत्सव–पर्व, तीज–त्यौहार, लोकगीत, लोककथा, मनोरंजन के साधन आदि का समावेश होता है। इन सब के प्रति लोगों के मन में श्रध्दा होती है। कुछ पल के लिए व्यक्ति अपनी रोज की घुटन से छुटकारा पाता है तथा मानसिक शान्ति प्राप्त करता है। लोकगीतों द्वारा व्यक्ति अपने मन की पीड़ा को व्यक्त करता है। लोककथाओं के कारण वहाँ के जन–जातियों के जीवन पर प्रकाश पड़ सकता है। लेकिन कभी कभी रूढ़ि–प्रथा–परम्पराएँ द्वारा नारी जाति का शोषण होता है। सामाजिक जीवन–यापन में देवी–देवता सम्बन्धी मान्यताएँ, व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति, वेशभूषा तथा खान–पान, अंधविश्वास, जातीय भेदभावना, बोलचाल, आदि का समावेश होता है। निम्न जातियों का सामाजिक जीवन बहुत ही दर्दनाक है। जातीय भेदभावना मानव जाति के लिए कलंक है। देवी–देवता सम्बन्धी मान्यताएँ, अंधविश्वास आदि द्वारा अशिक्षित लोग तथा नारी जाति का शोषण किया जाता है। विवेच्य जन–जातियों की बोलचाल, खानपान, वेशभूषा वहाँ की संस्कृति, भौगोलिक परिवेश के अनुसार है। निष्कर्षतः आलोच्य उपन्यासों के कथ्य के विस्तार के लिए बृहत कथानक का निर्माण किया है। वहाँ की संस्कृति एवं सामाजिक स्थिति के अनुरूप उन **जन** -जातियों के जीवन पध्दति को चित्रित किया है।

संदर्भ

1. डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ पृ 371-72
2. वही पृ. 50
3. डॉ. रांगेय राघव - मुर्दो का टीला - पृ. 331
4. डॉ. शशिभूषण सिंहल - हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, पृ. 27
5. डॉ. जयश्री बरहाटे - हिंदी उपन्यास सातवाँ दशक, पृ. 34
6. सम्पा. महादेवशास्त्री जोशी - मुलांचा संस्कृति कोश, पृ. 185
7. डॉ. सम्प्रति आर्याणी - लोकसाहित्य विमर्श, पृ. 7
8. डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ, पृ. 19-20.
9. वही पृ. 65
10. डॉ. रांगेय राघव - मुर्दो का टीला, पृ. 185
11. डॉ. वीरेंद्रसिंह - शब्दार्थों के गवाक्ष, पृ. 100
12. वही पृ. 57
13. डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ, पृ. 153